प्रकृति का बढता प्रकोप : कारण एवं निवारण

श्री तेजपाल सिंह
परिचर

परिचय

भारतीय ऋषियों ने शास्त्रों में प्रकृति के दो रूपों का वर्णन किया है। एक तो उसका मोहक रूप दूसरा उसका रौद्र रूप अर्थात रूलाने वाला। प्रकृति का पहला रूप आनन्ददायक है प्रकृति के पदार्थ प्रत्येक प्राणी को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। दूसरा रूप प्रकृति का बड़ा भयंकर और विकराल है यह सर्वनाश व महाविनाश करने वाला है।

शास्त्रों का कथन है कि ईश्वर, जीव, और प्रकृति ये तीनों तत्व अनादि और अनन्त है यें कभी नष्ट नहीं होते। प्रकृति का रूप परिवर्तन होता है। यही पंचभौतिक तत्व : अग्नि, जल, वायु, पृथ्वी और आकाश, प्रकृति का परिचय कराते हैं। इनके संयोग से जीवन बनता है और इनके वियोग से मृत्यु होती है।

प्रकृति का बढ़ता प्रकोप

प्राचीन समय से आज तक के समयावधि का यदि अवलोकन करते चले तो पता चलेगा कि प्रकृति अपना मोहक व विकराल दोनो ही रूप दिखाती आ रही है। संसार के अनेक देशों में देखें कि भूकम्प ने कितने लोगों को बर्बाद किया है। अभी कुछ वर्षों पहले ही भारत में उत्तर कांशी व महाराष्ट्र के लाटूर क्षेत्र में भूकम्प ने कितनी तबाही मचायी है कितने घर उजाड़े कितने लोगों की जान ली।

रूड़की विश्वविद्यालय के भूकम्प वैज्ञानिकों ने देहरादून में भूकम्प आने की घोषणा कर रखी है। प्रकृति का प्रकोप इसका तांडव नृत्य है। विश्व में कहीं ज्वालामुखी फटती हो, भूकम्प हो, बाढ़, समुद्री तूफान हो या शीत लहर या फिर रेगिस्तानी लू ये सभी प्राकृतिक प्रकोप है।

आज देखें तो चारो तरफ प्रकृति का भयंकर प्रकोप बढ़ रहा है। पूर्वी भारत में आसाम में, विहार हो या फिर उत्तर प्रदेश का पूर्वी क्षेत्र, गोरखपुर, बालखा आदि जिलों में भयंकर बाढ़ ने अनेक घरों को उजाड़ कर रख दिया। फसलें नष्ट हो गयी, अनेक पशु तथा कितने ही व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी। पिथोरागढ़ में मालपा आदि गाँवों का तो अस्तित्व ही समाप्त हो गया।

भूस्खलन से चट्टानों के खिसकने से नदियों के निर्बाध बहाव गति को बाधा पहुंचती है। हर वर्ष अकेले भारत में ही अनेक मांगों का सिन्दूर उजड़ जाता है। यह प्रकृति का विकराल रूप ही है कि कहीं पर बाढ़ आ रही है कहीं सूखा पड़ रहा है, कहीं महामारी फैल रही है तो कहीं समुद्री तूफान, तटबन्धों का टूटना आदि अनेकों दिन -व -दिन ऐसी घटनाये सुनने को मिलती ही रहती है।

विज्ञानियों का यह भी कथन मानना होगा कि यदि प्रकृतिक सन्तुलित होगा तो सुख शान्ति रहेगी और असन्तुलित होगी तो महाविनाश होगा। प्रकृति अपना सन्तुलन बनाये रखती है।

प्रकृति के बढ़ते प्रकोप का कारण

पाश्चात्य जनांबीकी विद्वान रार्बट माहथस का कथन है कि प्रकृति सदैव सन्तुलन बनाती है और जब-जब जनसंख्या अधिक बढ़ती है तो भूखमरी, अकाल, युद्ध, भूकम्प, बाढ़ आदि प्रकोप आते हैं और प्रकृति फिर अपना सन्तुलन बना लेती है।

माहथस का यह कथन सच हो सकता है। आज संसार की स्थिति भी कुछ इसी प्रकार बनी हुई है।परन्तु कुछ विद्धानों ने कहा है कि प्रकृति का इस प्रकार सन्तुलन बनाना न्याय संगत नहीं है।

कुछ भी हो आज इस प्रकोप के कारण में मानव भी कम जिम्मेदार नहीं है। मनुष्य ने प्रकृति के सन्तुलन को बिगाड़ा है। इसके अनेक कारण है जैसे -

१. मनुष्य ने पृथ्वी के सौन्दर्य पेड़ पौधे बनों को बेरहमी से काटा है।

२. वन्य प्राणियों, पशु पक्षियों को जो पर्यावरण को सन्तुलित रखने में सहयोग करते हैं। उन्हें बुरी तरह से नष्ट किया है।

३. ईश्वर ने प्रकृति के माध्यम से हम पृथवी के प्राणियों जीवधरियों को प्राणवायु अर्थात शुद्ध आक्सीजन प्रदान की, इन्सान ने आज चारों तरफ कार्वनडाई आक्साइड , कार्वन-मोनो आक्साइड जैसी जहरीली गैसें फैलाई।

४. प्रकृति ने जीवित रहने के लिए वातावरण का तापमान निश्चित किया अर्थात उपयुक्त गर्मी, सर्दी का मौसम बनाया इन्सान ने बड़ी-बड़ी इन्डस्ट्री जो सदैव कचरा, प्रदूषित पदार्थ को बढ़ाया जिससे तापमान में परिवर्तन हुआ। आज ओजोन परत फटने के कगार पर है, जिससे सूर्य की पैराबैंगनी किरणें पृथ्वी पर सीधे पड़ेगी और पृथ्वी का तापमान बढ़ रहा है और अधिक बढ़ेगा।

५. पृथ्वी का ताप अधिक बढ़ने से उत्तरी व दक्षिणपी ध्रुवों का महान हिमशैल पिघंलना शुरू हो गया, जिससे समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है ज्यादा बढ़ा तो समुद्र तटीय देश जलमग्न हो सकते हैं।

६. वातावरण गर्म होने से वाष्पीकरण बढ़ता है जिससे वर्षा अधिक होती है ।

७. पेड़ काटने से मिटटी कटाव होता है जो पानी को नहीं रोक पाता और पानी का तेज बहाव बाढ़ का रूप धरणप कर लेता है ।

८. प्रकोप बढ़ने का यह भी एक महत्वपूर्ण कारण है कि मनुष्य ने प्राकृतिक नियमों में छेड़छाड़ की है, जिससे पृथ्वी पर प्रदूषण बढ़ा है ; जैसे वायु प्रदूषण, जल प्रदूषणप, शोर प्रदूषण , भयंकर मशीनों व परमाणु परीक्षणों ने रेडियों एक्टिव प्रदूषण को जन्म दिया है ।

९. नदियों के बहते पानी के लिए मजबूत तटबन्धों का अभाव है जो बाढ रोकने में सक्षम नहीं है।

१०. भूकम्प, अकाल, महामारी, भयंकर तूफानों की पूर्व सूचना व उनकी उचित राकथाम में मनुष्य प्रकृति का सामना करने में असक्षम है ।

उपरोक्त कारण प्रकृति के मुख्य प्रकोप के कारण है । इससे अधिक भी बहुत कारण हो सकते है जिसका यहां वर्णन करना उचित है परन्तु पर्याप्त समय का अभाव है ।

प्रकृति के बढ़ते प्रकोप का निवारण

प्रकृति के महान प्रेमी व उपासक पाश्चात्य विद्धान रूसो ने कहा था कि ***"प्रकृति की और लौटो "*** अर्थात "Back to the Nature" । बहुत सही बात है यदि मनुष्य प्रकृति के नजदीक रहे । उसके सम्पर्क में रहे तो उसे आनन्द मिलेगा । उसे पर्याप्त आक्सीजन मिलेगी और मिलेगी हराभरा जंगल, लहलहाते पेड़ पौधे, कूं कू करते पक्षी, कल - कल करती नदियां । यदि वह प्रकृति से छेड़ छाड़ करे तो उसे प्रकृति का विकराल रूप देखना होगा । इसके प्रकोप से बचने के लिए निम्न उपाय या निवारण हो सकते हैं ।

१. प्रकृति के स्वभाव को समझना होगा उससे सामंजस्य रखने के प्रयास करने होगें ।

२. प्रकृति के सन्तुलन को बिगाड़ने वाले कारणों को बन्द करना होगा ।

३. ज्वालामुखी फटने व भूकम्प आने जैसी घटनाओं व उनके कारण का पता लगाना होगा। इससे उन्मुख क्षेत्र में पूर्व भविष्य वाणी करके वहां से आबादी वाले क्षेत्रों को हटाकर जानमाल की रक्षा की जा सकती है।

४. बाढ़ रोकने के लिए नदियों को निर्बाध गति से बहने को रोककर उनकी समुचित धरा बनानी होगी। आबादी वाले क्षेत्रों के पास मजबूत तटबन्ध बनाकर बाढ़ का प्रकोप रोका जा सकता है।

५. बेकार पड़े पानी को उचित जलाशयों में इकट्ठा किया जा सकता है इससे दो लाभ होगें एक तो सड़ने से रूकेगे जिससे महामारी का खतरा टलेगा। दूसरे वर्षा के अभाव में उस पानी को सिंचाई कार्यों में लिया जा सकता है।

६. वनों का विकास करना होगा। पेड़ों को बचाना होगा नये पेड़ लगाने होंगे इससे भूमि कटाव, बाढ़ आदि तो रूकेगें ही पर्यावरण भी सुधरेगा।

७. अकाल रोकने के लिए पानी के साधनों को जुटाना होगा, रेगिस्तानों, मरूथलों में जलवायु के अनुकूल पेड़ पौधे लगाने होंगे।

८. लोगों की आबादी की समुचित व्यवस्था की जानी होगी। उनके आवास ऐसे बनाने होंगे जो गर्मी सर्दी, बाढ़ आदि से सुरक्षित रहें।

उपरोक्त उपायों व निवारण के अतिरिक्त भारतीय ऋषियों की भी बात माननी होगी। भारतीय शास्त्रों में यज्ञ, हवन का विधान है जो महामारी को रोकता है इसका प्रचार करना चाहिए। आयुर्वेद का कथन है कि तुलसी के पेड़ के ६० वर्ग फुट के क्षेत्र में वाइरस जैसा विषाणु नहीं पनपता इसलिए इसको पूज्य माना गया है। यहीं नहीं भारतीय जीवन पद्धति पवित्रता बनाये रखने में मदद करते हैं। इस अवधारणा का सर्वांगीण विकास किया जाय।

प्राकृतिक प्रकोपों में बढ़ते प्रदूषण का विशेष योगदान है। यदि प्रदूषण पर नियंत्रण किया जाये तो कुछ सीमा तक प्रकृति के प्रकोपों से बचा जा सकता है। पृथ्वी को हरी भरी करके सुख शान्ति लायी जा सकती है।

प्रकृति के साथ समन्वय जहां एक ओर आनन्ददायक है वहीं इसमें परिवर्तन उसकी विभिषिका से जूझना है।

***